[PAPER-I (B)]

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

9/01/2021

130

Roshni

PART- A

1 A

सामान्यतः ऊँचाई बढ़ने से तापमान में कमी आती है परन्तु जब वायुमंडल में ऊँचाई बढ़ने पर ठंडी वायु नीचे आती है तो ताप ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान में कमी के स्थान पर वृद्धि होती है इसे तापीय प्रतिलोम कहते हैं परिणामस्वरूप प्रतिचक्रवाती दशाएं उत्पन्न होती है

2

1 B

मिश्रित कृषि — जब कृषि में उत्पादन प्रतिविधि के साथ-साथ पशुपालन किया जाता है तो उसे मिश्रित कृषि कहते हैं

½

1 C

आपदा के पश्चात प्रभावित क्षेत्रों में जन धन को हानि होती है तो ऐसी स्थिति में प्रभावित लोगों को आर्थिक सहायता, शारीरिक तथा मानसिक रूप से उन्हें सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जाता है तथा प्रभावितों को पुनः अन्य स्थानों पर पुनर्स्थापित किया जाता है इसे राहत व पुनर्वास कहते हैं

2

Scanned by CamScanner

उत्तर पुस्तिका

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

1 (अ)

सापेक्ष आर्द्रता – वायु में जलवाष्प धारण क्षमता की वास्तविक मात्रा तथा अधिकतम वायु में जलवाष्प धारण क्षमता के अनुपात को सापेक्ष आर्द्रता कहते हैं।

सापेक्ष आर्द्रता = जलवाष्प की मात्रा / वायु में जलवाष्प ग्रहण करने की क्षमता × 100

ऊँचाई में वृद्धि के साथ → तापमान ↓ →

⇓

निम्न ताप पर ... ← सापेक्ष आर्द्रता में वृद्धि

सापेक्ष आर्द्रता 100%

↓

ओसांक बिंदु

1 (ब)

जेट स्ट्रीम – क्षोभमंडल के ऊपर तथा समताप मंडल के निचले भाग में पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बहने वाली संकरी पट्टी में बहने वाली पवनों को जेट पवनें कहते हैं।

जेट पवनें भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक हैं।

अवनलिका अपरदन - जल तीव्र गति से बहती हुई नदी जल धारा द्वारा चट्टानों को तथा मृदा की ऊपरी परत को काटकर गहरे गड्ढों का निर्माण कर दिया जाता है तो उसे अवनलिका अपरदन कहते है।

प्रभाव - मिट्टी का अपरदन

उदा.- ~~चंबल~~ की चंबल नदी द्वारा निर्मित बीहड़ भूमि

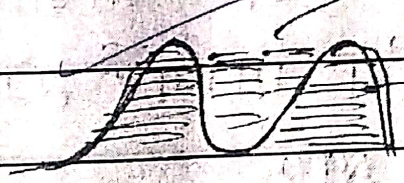

एटॉल - प्रवाल भित्ती द्वारा निर्मित संरचना जब प्रवाल किसी द्वीप के सहारे विकसित होती है तथा तट व प्रवाल द्वीप के बीच लैगून समान संरचना बन जाती है। रिंग के समान संरचना

एल्बिडो - ~~सूर्य द्वारा पृथ्वी पर~~ पृथ्वी पर सूर्य द्वारा प्राप्त विकिरण तथा परावर्तित विकिरण के अनुपात को एल्बिडो कहते है।

~~सूर्य से आपतित विकिरण~~

A एल्बिडो = पृथ्वी परावर्तित / सूर्य से आपतित विकिरण = 35%

Leave Blank रिक्त छोड़ें
Do not write beyond this line इस पंक्ति के बाहर कुछ भी ना लिखें

Write question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

1 T

गांधी सागर बांध –
म.प्र. के मंदसौर जिले में
चंबल नदी पर स्थापित
1960 में जवाहरलाल नेहरू द्वारा
115 MW विद्युत ऊर्जा उत्पादन क्षमता

2 U

सौर्यिक स्थिरांक –

1 K

भ्रंशोत्थ पर्वत –
जब दो समानांतर भ्रंश रेखाओं के बीच
का भाग नीचे धंस जाता है तो भ्रंशोत्थ
पर्वत का निर्माण होता है
उदा॰ भारत - विन्ध्याचल पर्वत
यूरोप - ब्लेक फारेस्ट, वासेजस पर्वत

1 L

नर्मदा और ताप्ती ज्वारनदमुख बनाने वाली
प्रमुख नदियां हो

टेथिस कुसान्नित के एक हिस्सा गहरा व्यापार था जो कि टाको ऊ० लोरसा लेन्टु व जलनिक बेगनर ने महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के अन्तर्गत दिया।
यह वृहद कुसा छुहान्नति पेंजिया रसथतरेवण के मध्य अवस्थित थी।
भूमध्यसागर टेथिस सागर का अवशेष है।

अंत: उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र –
– निम्न वायुदाब का क्षेत्र
– उत्तर व दक्षिणी गोलार्द्ध की व्यापारिक पवनों का अभिसरण क्षेत्र
– वायु का ऊर्ध्वाधर परिवहन होता है
– ITCZ के उत्तरायन के परिणाम स्वरूप चक्रवातों की उत्पत्ति होती है

शस्य गहनता – से तात्पर्य है – किसी क्षेत्र विशेष कि निश्चित समयान्तराल में बोई जाने वाली फसलों की संख्या

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{कुल बोया गया क्षेत्र}} \times$$

भारत की शस्य गहनता = 138%
म० प्र० की शस्य गहनता = 155%

२ (प) भारत में कोयले का निक्षेपण मुख्य रूप से गोंडवाना व टर्शियरी क्रम की चट्टानों में हुआ है।

भारत कोयला उत्पादक क्षेत्र → बिटुमिनस, एन्थ्रासाइट, लिग्नाइट, पीट

(गोंडवाना) 98% भंडार
(टर्शियरी) 2% भंडार

① झारखंड – दामोदर घाटी: झरिया, गिरिडीह, बोकारो

② छत्तीसगढ़ – कोरबा खान, तालचर, रामकोला

③ म.प्र. – सोहागपुर, सिंगरौली, कान्हन, पेंच, मोहपानी।

④ ओडिशा – तलचर को (ब्राह्मणी नदी घाटी)।

⑤ पश्चिम बंगाल – रानीगंज

⑥ आंध्र प्रदेश – सिंगरैनी (कृष्णा-गोदावरी नदी घाटी)।

① असम – माकुम, लखीमपुर

② तमिलनाडु – नेवेली (लिग्नाइट), मन्नार गुडी

③ मेघालय – गारो, खासी, जयंतिया

④ राजस्थान – पालना

⑤ जम्मू कश्मीर – कालाकोट (एन्थ्रासाइट)

कोयला उत्पादन की दृष्टि से भारत का चौथा स्थान है।

2

भारत में प्रमुख पेट्रोलियम उत्पादक क्षेत्र —

प्रमुखतया 4 क्षेत्रों में पेट्रोलियम का उत्पादन होता है।

(1) असम → डिगबोई (1962)
→ नाहरकटिया
→ शिवसागर
→ सुरमा घाटी
→ [illegible]

(2) मुम्बई हाई – 60% उत्पादन
अपतटीय क्षेत्र, वसीन तेल क्षेत्र

(3) राजस्थान – मंगला तेल क्षेत्र (बाड़मेर)
रेगिस्तानी भाग में

(4) गुजरात → कैम्बे व कच्छ की खाड़ी
→ मेहसाना
→ अंकलेश्वर
→ कलोल
→ सूरत
→ वरोदा

(5) कृष्णा गोदावरी – तेल + प्राकृतिक गैस
घाटी — रावा तटीय क्षेत्र

4

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

अन्य संभावित क्षेत्र –

- ओडीशा का तटीय क्षेत्र
- केरल का तटीय क्षेत्र
- विशाल मैदान की उत्तरी भाग।
- अण्डमान निकोबार का तटीय क्षेत्र
- सुन्दरवन क्षेत्र

ACADEMY INDORE - SAG

Fill question number and subquestion number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

2 (b) ज्वालामुखी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे मैग्मा/लावा पृथ्वी की आंतरिक परतो से होते हुए बाहर निकलता है

ज्वालामुखी निर्मित प्रमुख स्थालाकृतियाँ

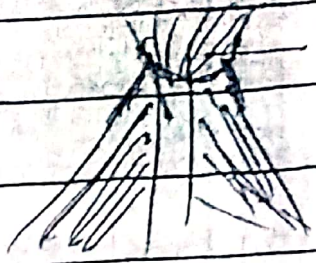

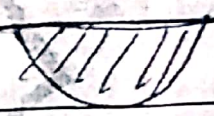

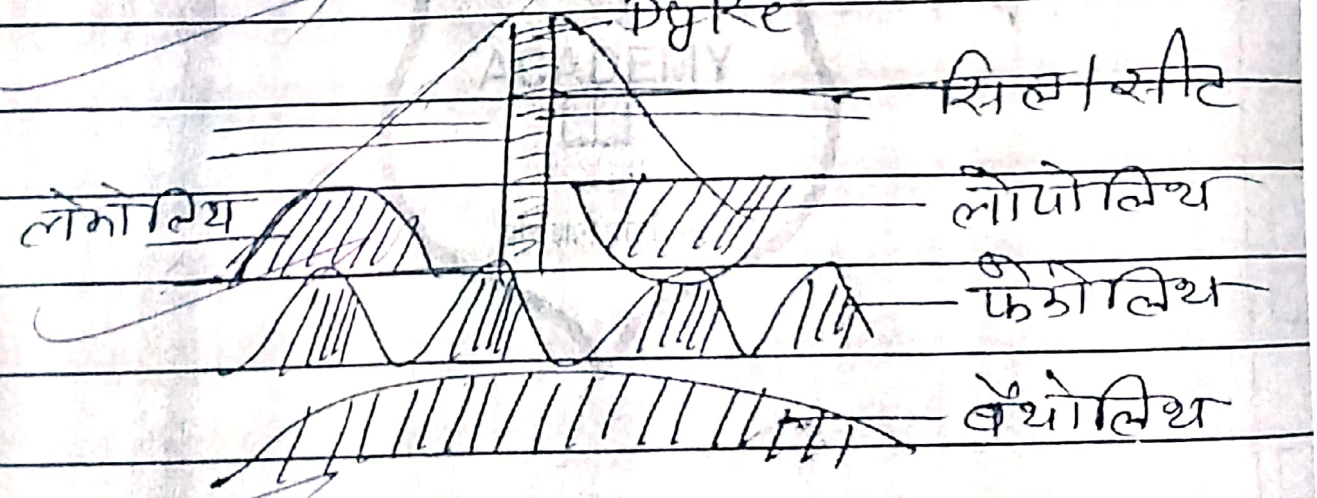

(1) ज्वालामुखी पर्वत
(2) सिन्डर शंकु
(3) क्रेटर / ~~कोल्ड~~ कोल्डेरा
(4) लोपोलिथ – आंतरिक परतो मे तस्तरीनुमा संरचना

(5) लैकोलिथ – ~~उभरा~~ उठे हुए बेसिन / ब के समान / पठारी संरचना

(6) डाइक – परतो को तोडकर स्तंभ नुमा संरचना

(7) ~~वि~~ फैकोलिथ – चट्टानी परतो के बीच जब मैग्मा लहरनुमा रूप में ~~ज~~ ठंडा हो जाता है उसे फैकोलिथ कहते है

(8) दोच भागो के बीच पतली चादर के रूप में स्सीट

सीट जब मोती होती है तो सिल का निर्माण

(9) बैथोलिथ - सर्वाधिक वृहद आकार की संरचना
- कोई निश्चित आकार नहीं होता है

इस प्रकार ज्वालामुखी के द्वारा विभिन्न आभ्यान्तरिक व बाह्य संरचनाओं का निर्माण होता है।

मृदा के निम्नीकरण को रोकने के लिये मृदा संरक्षण व संवर्धन आवश्यक है

प्रमुख कारण

- → मृदा अपरदन
- → मृदा गुणवत्ता का ह्रास
- → मृदा लवणीकरण और क्षारीयकरण
- → मृदा का कटाव

मृदा संरक्षण व संवर्धन हेतु प्रमुख प्रयास —

(1) वनीकरण व वनों की कटाई पर रोक

(2) [illegible]

(2)

FAST ACADEMY

2

किसी भी प्रकार के उद्योगों के स्थानीयकरण की प्रवृत्ति उनके पूर्ववर्ती व अग्रवर्ती आवश्यकताओं पर निर्भर करती है –

पूर्ववर्ती आवश्यकताएं
- → प्रशासनिक अनुमति
- → आधारभूत अवसंरचना
- → सस्ता श्रम
- → कच्चा माल आपूर्ति
- → जल आपूर्ति,
- → भूमि,
- → पूंजी

उद्योगों की स्थापना के पश्चात उत्पादन को खपाने के लिये तथा लाभ अर्जित करने हेतु अग्रवर्ती आवश्यकताएं

अग्रवर्ती आवश्यकताएं
- → उत्पादन का भंडारण
- → पैकेजिंग
- → ब्रांडिंग
- → वितरण
- → परिवहन साधन
- → सड़क व रेलमार्ग
- → बाजार की उपलब्धता

इस प्रकार उद्योग की विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगीकरण में ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

खाद्य प्रसंस्करण – खाद्य प्रसंस्करण से तात्पर्य है कृषि उत्पादित खाद्यान्न, फल व सब्ज़ियों को बनाने की खाद्य वस्तुओं में रूपांतरण ताकि मूल्यवर्धन कृषि वस्तुओं का मूल्यवर्धन के साथ ही कृषकों की आय में वृद्धि के साथ अधिक वस्तुओं की खपत बढ़े।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की वर्तमान आवश्यकता में उपयोगिता

(1) कृषि को लाभ का धंधा बनाने हेतु

(2) किसानों तक कृषकों की आय दोगुना करने हेतु कृषकों को फसल का उचित मूल्य दिलाना।

(3) अधिशेष उत्पादन का उपयोग कर अन्य खाद्य वस्तुओं का उत्पादन

(4) मेगा फूड पार्क, फूड क्लस्टर का निर्माण कर औद्योगिक विकास किया जा सकता है।

(5) नये रोजगारों का सृजन होगा।

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

(6) वर्ग विभिन्न उत्पादों के निर्यात के द्वारा भी लाभ अर्जित किया जा सकता है।

इस प्रकार भारत सरकार द्वारा खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये मेगाफूडपार्क योजना, संपदा योजना का क्रियान्वयन कर रही है

Do not write beyond this line

Leave Blank

Leave Blank

question number and subsection number inside the boxes
में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

M भारतीय कृषि की प्रमुख समस्यायें –

क.

(1) भारत एक कृषि प्रधान देश 45% रोजगार कृषि पर निर्भर द्वारा परन्तु कृषि में प्रच्छन्न व मौसमी बेरोजगारी संलग्न है।

(2) अत्यधिक जनदबाव → छोटी जोतें बड़े फार्मो का निर्माण नहीं हुआ।

(3) कृषि मे परंपरागत तरीकों का प्रयोग न आधुनिक तकनीकि का प्रयोग नहीं
→ अनुसंधानों को [illegible] से जनसामान्य अवगत नहीं

(4) लोगों मे जागरूकता का अभाव

(5) अधिकांश क्षेत्रों मे सिंचाई सुविधाओं का विकास नहीं हुआ है

(6) वर्षा आधारित कृषि है; अतः मानसून के देरी से आने से या नहीं आने से संपूर्ण अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है

(7) अत्यधिक रसायनों व कीटनाशकों के प्रयोग से खाद्यान्न प्रदूषित साथ ही मृदा की उर्वरता का ह्रास।

(8) प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता कम है।

(9) उचित रूप से फसल चक्र का पालन न करना।

(10) फसल सघनता अधिक फलस्वरूप मृदा की गुणवत्ता में गिरावट

(11) पर्याप्त भंडारण सुविधा की विकसित भारत में कृषि अभाव

(12) कृषि विपणन प्रणाली में दोष

4

FAST ACADEMY
ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठितं

बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

भूकंप तरंग आधारित अध्ययन के आधार पर पृथ्वी की आंतरिक संरचना तीन को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है

① क्रस्ट — पृथ्वी की ऊपरी परत

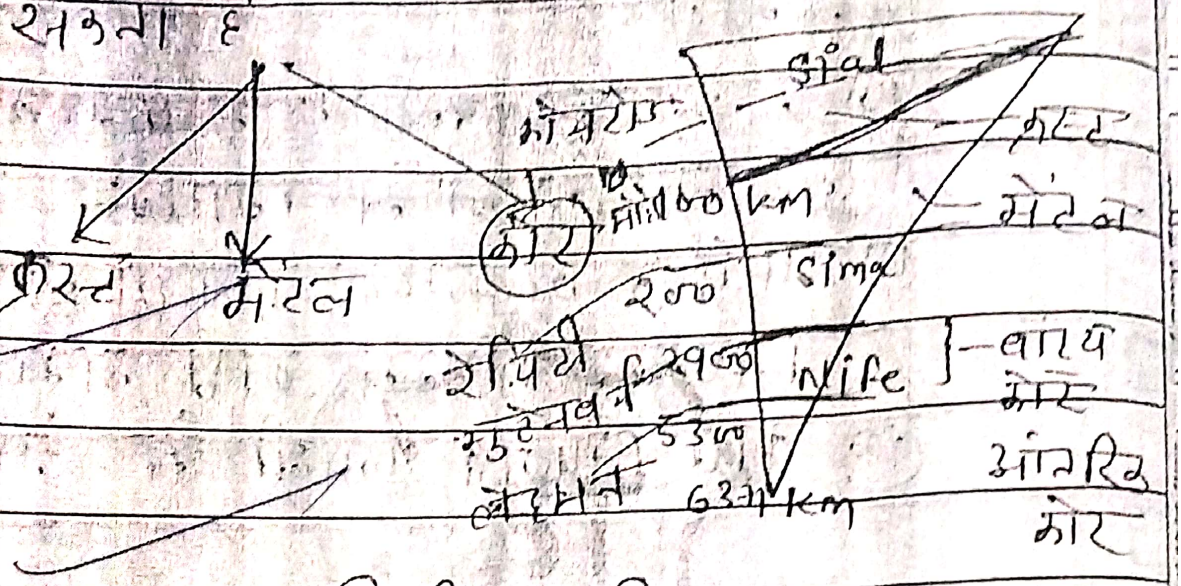

— घनत्व 3.3 gm/cm³

— P & S तरंगों की तीव्र गमन

महासागरीय क्रस्ट — 5 km की

महाद्वीपीय क्रस्ट — 48 km की चौड़ी

औसत क्रस्ट चौड़ी — 33 km

क्रस्ट के मध्य — कोनराड

— क्रस्ट व मेंटल के मध्य मोहो असंबद्धता है।

② मेंटल — गहराई में जाने पर घनत्व में वृद्धि

परन्तु 100 km के बाद S तरंगों

की गति धीमी → बेनी ऑफ ज़ोन
यहाँ चट्टानें आंशिक पिघली
अवस्था में → डुबेला मंडल
- 2900 km के बाद P तरंगों की
गति में वृद्धि
- बाह्य कोर व मेंटल के मध्य - गुटेनबर्ग
असंबद्धता

③ कोर < आंतरिक कोर
बाह्य कोर

- आंतरिक कोर 2900 km से
5300 km तक
- आंशिक पिघली हुई चट्टानें
P तरंगों के वेग में कमी
- आंतरिक व बाह्य कोर के मध्य
लेहमन असंबद्धता
- ~~2900 के बा. 5300 के बाद~~
5300 - 6371 km तक आंतरिक कोर

इस प्रकार पृथ्वी की आंतरिक भाग
में चट्टानों की संरचना व संगठन
स्पष्ट नहीं है

2 2

जल के अनुकूलतम उपयोग हेतु कुशल सिंचाई विधियाँ आवश्यक है

सिंचाई की प्रमुख विधियाँ

① चक्रीय प्रणाली → पानी का वितरण कम मात्रा में उपयोग

② ड्रिप सिंचाई → खेत के नीचे से पाइप प्रणाली छिद्रयुक्त पाइप का प्रयोग

③ स्प्रिंकलर सिंचाई या फुहार सिंचाई → वर्षा की बूंदों की तरह पानी छिड़काव → बलुआ जमीन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त

(3.) केन्द्रीय धुरी सिंचाई

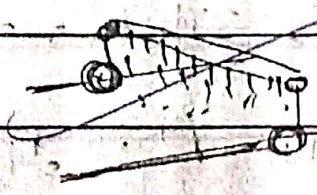

खेत के दोनों ओर पहिये युक्त धुरी प्रणाली से पूरे खेत में सिंचाई

कुशल सिंचाई प्रणाली के द्वारा ही जल संरक्षित व संवर्धित किया जा सकता है क्योंकि संपूर्ण जल का 60% उपयोग सिंचाई के लिये होता है

3 A

प्रायद्वीपीय पठारी भाग के प्रमुख आकृतिक स्थलाकृतियां

पठारी भाग	पर्वतीय	मैदान
दक्कन का पठार	नीलगिरि	पूर्वी तटवर्ती मैदान
मध्य भारत का पठार	पालकोंडा	पश्चिमी तटवर्ती मैदान
बुन्देलखण्ड पठार	वेलीकोंडा	
काठियावाड़ पठार	मल्लामला	
दण्डकारण्य पठार	तमिलनाडु	
	पालनी	
	शेवराय	
	जावदी	

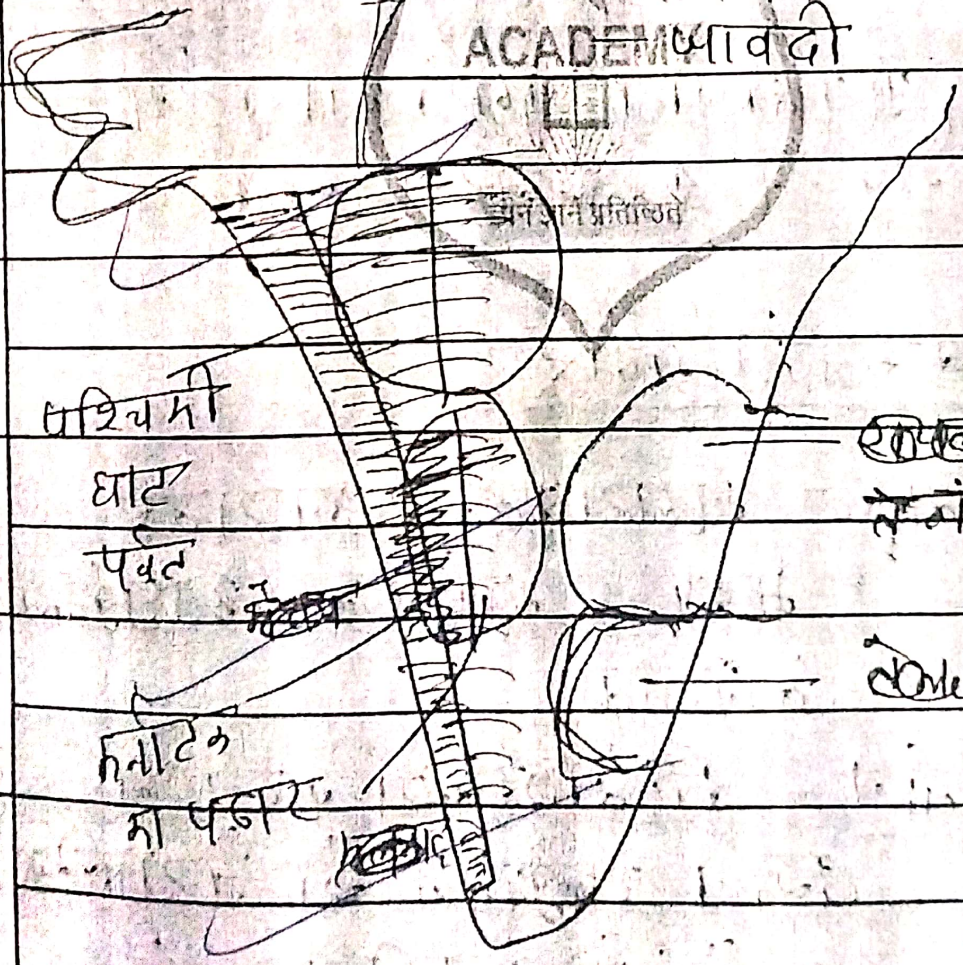

प्रायद्वीपीय पठार

भारत की स्थलाकृतियाँ

[प्रायद्वीपीय भाग] [पहाड़ी भाग] [मैदान] मरुस्थली

अरावली → दक्कन पठार → पूर्वी

विन्ध्याचल → मध्य भारत का पठार → पश्चिमी

सतपुड़ा → पूर्वी भारत का पठार

पश्चिमी घाट

पूर्वी घाट → काठियावाड़

प्रायद्वीपीय पठारी भाग में प्रमुख रूप से 4 पठार सम्मिलित है।

(1) दक्कन का पठार

विस्तार - महाराष्ट्र, गुजरात, म.प्र., कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना

निर्माण - क्रिटेशियस कल्प में दरारी उद्भेदन से बेसाल्टिक चट्टानों से निर्मित

प्रमुख पर्वत श्रेणी
- → बालाघाट
- → सतमाला
- → अजंता
- → हरिश्चन्द्र

मोटाई – दक्षिण में 2000 मीटर
स्तर के

दक्कन का पठार

- कर्नाटक का पठार
  - ⇓
  - समतल भाग → मैदान
  - ऊबड़ खाबड़ ⇓ मलनाड
- तेलंगाना का पठार
  - गोदावरी व कृष्णा नदी के बीच
- रायलसीमा का पठार
  - (कृष्णा नदी के दक्षिण)
  - ⇓
  - आर्कियन चट्टान

Leave Blank
Do not write beyond this line

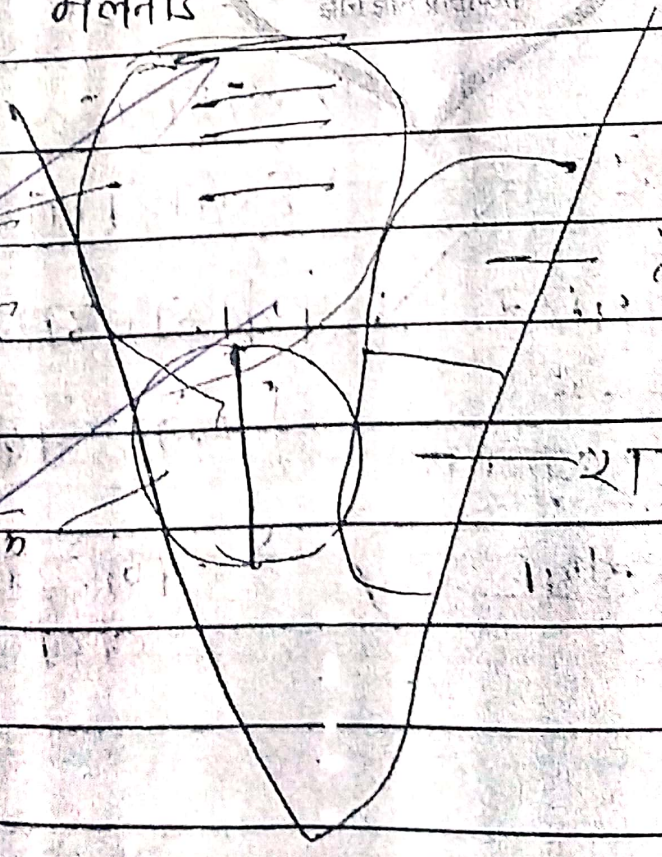

question number and sub-question number inside the boxes
प्रश्न में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

② मध्य भारत का पठार

दक्कन पठार का ही विस्तार

→ मालवा का पठार — (सिगार चोटी)

→ मेवाड़ का पठार — मध्यप्र राजस्थान

→ बुन्देलखण्ड पठार — (सिद्धबाबा चोटी)

→ रीवा पन्ना पठार — म०प्र० में

③ पूर्वी भारत का पठार

→ बघेलखण्ड का पठार — म०प्र० के पूर्व में

→ छोटा नागपुर पठार — छत्तीसगढ़, ओडिशा,

→ मेघालय पठार — मेघालय झारखण्ड

→ दण्डकारण्य पठार — म०प्र० के द० पूर्व में - CG में

→ राजमहल पहाड़ी

छोटा नागपुर → हजारी बाग का पठार

→ रांची का पठार

पारसनाथ हिल

(ग) काठियावाड़ प्रायद्वीप

– ~~काठियावाड़~~ पठार – गुजरात में

– क्रिटेशियस काल में निर्मित

– काली मृदा क्षेत्र

– गिर पहाड़ी क्षेत्र

(एशियाटिक लायन की शरणस्थली)

FAST ACADEMY

3 (ख)

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत का प्रतिपादन
– हैरी हेस, लेगवर, मैकेन्जी, पार्कर आदि वैज्ञानिकों ने किया।

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी की क्रस्ट को छोटे छोटे स्थल खण्डों में विभाजित किया है जिसे प्लेट कहते हैं।

इसके अनुसार 6 वृहद व 6 छोटी प्लेट हैं।

वृहद प्लेट	छोटी प्लेट
(1) उत्तरी अमेरिकी प्लेट	कोकेशियन
(2) दक्षिणी अमेरिकी प्लेट	नाज्का
(3) यूरेशियन प्लेट	कैरेबियन
(4) इण्डो ऑस्ट्रेलियन	अरब
(5) अफ्रीकन प्लेट	
(6) प्रशांत महासागरीय प्लेट	

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार सभी प्लेट गतिमान है क्योंकि क्रस्ट मेंटल के ऊपर तैर रही है

- प्लेट एक दूसरे के समानांतर संचलित
- फलस्वरूप भूकंपों की उत्पत्ति
उदा० कैलीफोर्निया का सैन एन्ड्रियाज भ्रंश

ACADEMY
Leave Blank
Do not write beyond this line
Leave Blank

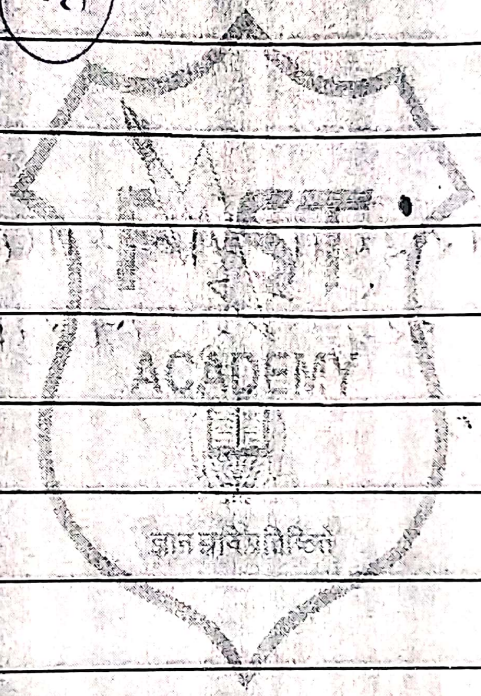

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

PAPER-(1)
PART-(B)

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

2 C

मृदा :- पृथ्वी के भूपृष्ठ पर उपस्थित चट्टानों के कण तथा जीव वनस्पति के सड़े गले अवशेषों का संगठन है।

मृदा निर्माण के कारक

- कार्बनिक पदार्थ
- खनिज पदार्थ
- मृदा घोल
- मृदा वायुमंडल

(1) कार्बनिक पदार्थ → ह्यूमस की मात्रा
→ वनस्पति व जन्तु समूह
→ सूक्ष्म जीव व वनस्पति

(2) खनिज पदार्थ

मुख्य → नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, सल्फर,

प्राथमिक - ऑक्सीजन, सिलीका, एल्युमीनियम, आयरन

द्वितीयक - कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम

(3) मृदा घोल - मृदा का जल तथा पोषक तत्वों का स्रोत

(स) मृदा में उपस्थित वायु की मात्रा- जो भी वायु प्रक्रिया की क्रम में वृद्धि करती है → मृदा वायुमंडल।

3

FAST ACADEMY

उत्तर पुस्तिका

प्रश्न संख्या तथा उपप्रश्न क्रमांक अंकित करें

2 (1) पारिस्थितिकी – पृथ्वी के वायु में में उपस्थित समस्त जैविक अजैविक व सूक्ष्म जीवों के परस्पर अन्तर्क्रिया का अध्ययन कहलाता है।

वर्तमान समय में मानव ने पारिस्थितिक तंत्र में हस्तक्षेप कर निम्न दुष्प्रभावों को उत्पन्न किया है –

(1) प्राकृतिक आवासों का विखण्डन के परिणामस्वरूप ~~इस~~ प्रजातीयों का विलोपन।

(2) आधुनिक कृषि में अत्याधिक रसायनों व कीटनाशकों के ~~अति~~ प्रयोग के परिणामस्वरूप – रसायनों का खाद्य श्रृंखला में प्रवेश व → जैव संचयन व जैव आवर्द्धन

(3) पर्यावरण प्रदूषण व पर्यावरण क्षरण

(4) जलवायु में परिवर्तन ~~[illegible]~~ –

(5) ग्लोबल वार्मिंग – अत्याधिक ग्रीनहाउस गैसों के उत्पादन के कारण

(6) ~~[illegible]~~ निर्वनीकरण के कारण कार्बन सिंक में कमी व कार्बनडाइऑक्साइड की वायुमंडल में अधिकता हुई हुई

(7) आर्द्रभूमियों में अवशिष्ट जल का निकास करना आर्द्रभूमि पारितंत्र को प्रभावित।

(8) इस प्रकार पारिस्थितिकी तंत्र में मानवीय हस्तक्षेप का प्रभाव संपूर्ण मानव समुदाय पर पड़ रहा है जो विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का कारण भी बनता है।

(6)

ACADEMY
ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठितं

ढेबर समिति की अनुशंसा के आधार पर 75 जनजातियों को आपदाग्रस्त घोषित करने की अनुशंसा की थी

जनजातियों के आपदाग्रस्त होने के आधार

(1) जनजातियों की पारंपरिक गतिविधियों का नष्ट होना।

(2) तेजी से जनसंख्या कम होना।

(3) खेती की पुरातन पद्धतियाँ

(4) साक्षरता का स्तर

भारत की प्रमुख आपदाग्रस्त जनजातियाँ

(1) M.P. — बैगा, भारिया, सहरिया

(2) अण्डमान व निकोबार ⇒ ग्रेट अंडमानी, सेंटिनलीज, ओंगे

(3) झारखण्ड — हो, मुण्डा, संथाल

(4)

2.

भारत में जूट → गोल्डन फाइबर।
→ प्राकृतिक नवीनीकरणीय, बायोडिग्रेडेबल व पारिस्थितिकी अनुकूल उत्पाद।

→ जूट कच्चा माल आधार उद्योग है अतः उद्योग इसके कारखाने कच्चे माल के क्षेत्र में स्थापित किये जाते हैं।

→ इसका कच्चा माल सस्ता होता है

प्रमुख जूट उद्योग →

(1) पश्चिम बंगाल में कुल उत्पादन का 85% होता है।

(2) बिहार केन्द्र भागलपुर
- कटिहार
- रामपुरा

(3) उत्तरप्रदेश → कानपुर

(4) आंध्रप्रदेश → ओंगोल
- गुंटूर
- विशाखापत्तनम

पश्चिम बंगाल में सकेन्द्रण कारण
- → कच्चा माल
- → अधिक जनसंख्या
- → सस्ते श्रमिक
- → बंदरगाह सुविधा

परन्तु जूट उद्योग अनेक समस्याओं से ग्रसित है। घरेलू बाजार में

जूट उद्योग की समस्याऐं:

- बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा
- मिलों के आधुनिकीकरण का अभाव
- ऊँची लागत
- कच्चा माल में कमी
- उत्पादन में अस्थिरता

आदि के कारण जूट उद्योग को काफी नुकसान हुआ।

(क) प्रवसन :- जब आर्थिक, सामाजिक कारणों से लोगों का स्थानांतरण एक स्थान से दूसरे स्थान होता है तो उसे प्रवसन कहते हैं।

ग्रामों से शहरों की ओर प्रवसन के मुख्य कारण निम्न हैं :-

(1) रोजगार की तलाश में
(2) कृषि का लाभप्रद न रहना व अधिकांश प्रवसन श्रमिहीन मजदूरों का होता है
(3) आर्थिक लाभ की दृष्टि से, शहरों की ओर आकर्षित होना।
(4) शहर - मुख्य रूप से शिक्षा के केन्द्र हैं
(5) ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त आपसी तनाव से क्षुब्ध होकर भी प्रवसन होता है।
(6) शहरों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक रोजगार एवं मजदूरी दर।

निष्कर्षतः प्रवसन से जनसंख्या का असन्तुलन बढ़ता है।

Fill question number and sub-question number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपप्रश्न क्रमांक अंकित करें

2 1

जून से सितम्बर तक ~~[illegible]~~ सूर्य के उत्तरायण के परिणाम स्वरूप उत्तर भारत में निम्न वायु दाब का क्षेत्र होता है।

वहीं तिब्बत के पठार के अत्यधिक गर्म होने से पूर्वी जेट स्ट्रीम का निर्माण हो दक्षिण में बंगाल की खाड़ी के ऊपर होते हुये मेडागास्कर में अवतलित होती है

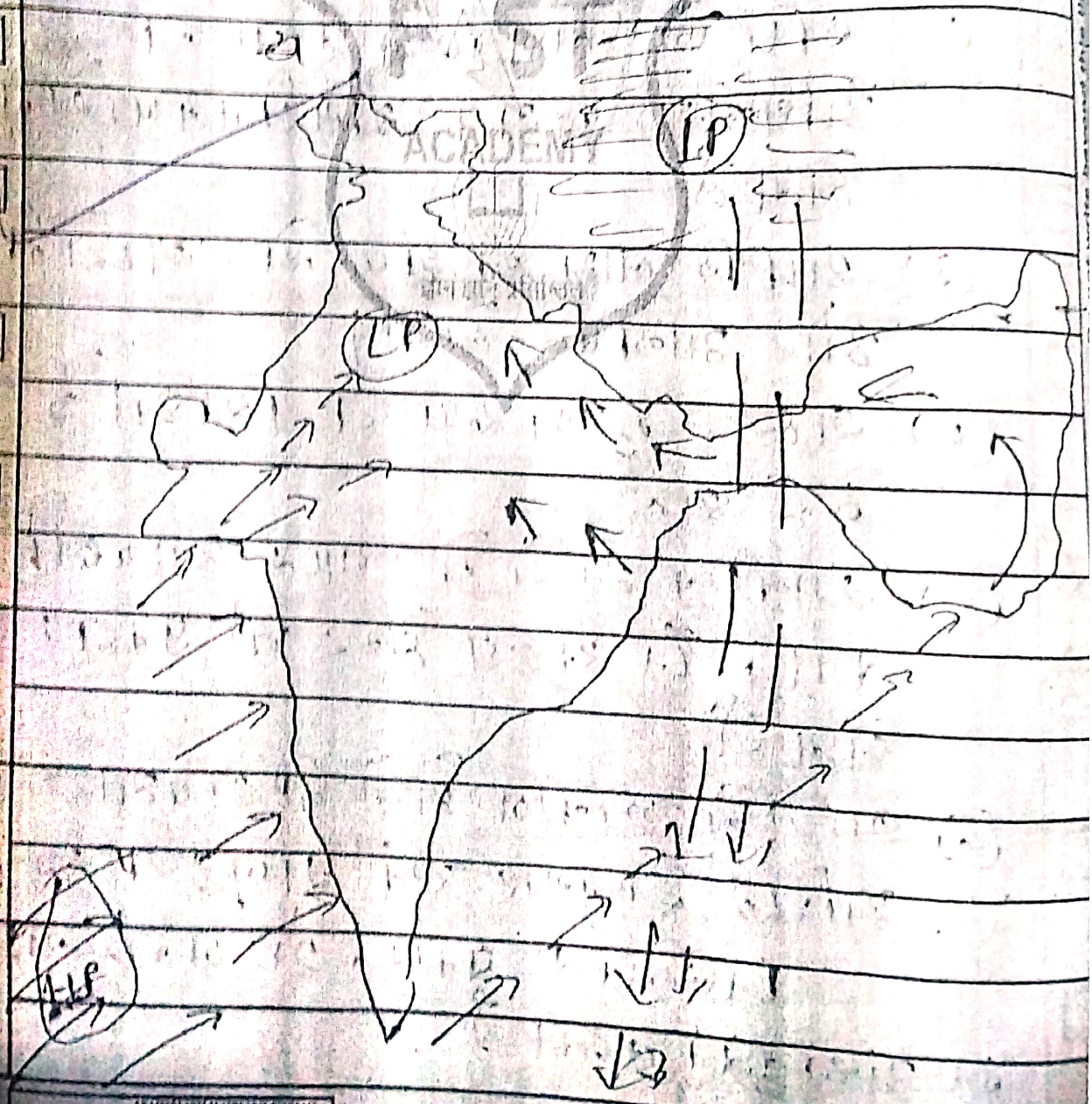

अतः मेडागास्कर को उच्च वायुदाब
से व्यापारिक पवनों का भारतीय
निम्न वायुदाब के केन्द्र की ओर आकर्षण
— जिन्हें दक्षिण पश्चिमी मानसून
कहते हैं
— जून के प्रथम सप्ताह में केरल तथा
अण्डमान निकोबार में वर्षा
— पश्चिमी घाटों में अरब सागर की
शाखा से वर्षा

दक्षिण पश्चिम मानसून

↓ ↓

अरब सागर की शाखा	बंगाल की खाड़ी की शाखा
① पश्चिमी घाट पर्वत	① पूर्वी भारत छोटानागपुर पठार
② नर्मदा ताप्ती भ्रंश घाटी	
③ गुजरात में अरावली के समानांतर	② उत्तर पूर्व भारत
	पूर्वी हिमालय से पूर्व पश्चिम तक

भारत में 80% वर्षा 4 माह में मानसूनी पवनों से प्राप्त होती है।

वासा में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

2 1

भारत में नदी जल के तटबंधो का अतिक्रमण कर जब आसपास के क्षेत्रों में फैल जाता है तो उसे बाढ़ कहते हैं।

भारत विश्व का दूसरा बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है -

भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र -

(1) निम्न गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान -
— बिहार, असम, पूर्वी उत्तरप्रदेश, पश्चिमबंगाल

(2) महानदी, कृष्णा कावेरी डेल्टा -
निम्न भूमि व मंद ढाल के कारण बाढ़

(3) अन्य क्षेत्र - उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर घाटी, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के कुछ भाग

बाढ़ से निपटने हेतु सुझाव -

(1) मौसम पूर्वानुमान को विश्वसनीय बनाना

(2) SMS के माध्यम से जानकारी

...question number and subsection number inside the boxes
...प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

(3) नदी के थाल क्षेत्रों मे निर्माण को प्रतिबंधित करना आवश्यक है

(4) बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों मे आश्रय स्थलों का निर्माण

(5) वर्षा जल का ~~संचय~~ संचय छोटे-छोटे अवरोध का निर्माण।

(6) मौसम व पूर्वानुमान तंत्र और आपदा प्रबंधन समितियां बनाना

(7) जलवायु परिवर्तन का अध्ययन करना।

अपने प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

12

सतत विकास की अवधारणा ब्रंटलैंड ने ब्रंटलैंड रिपोर्ट में दी। इसका तात्पर्य है कि प्राकृतिक संसाधनों को इस तरह से मितव्ययता पूर्वक उचित उपयोग करना कि संसाधनों को भविष्य की पीढ़ी के लिये सुरक्षित रखा जा सके।

भारत में सतत विकास को बढ़ाता देने के प्रमुख प्रयास –

① परंपरागत ऊर्जा स्त्रोतों की जगह नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों का प्रयोग – जैसे – सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस,

② भारत ने अपना INDC निर्धारित किया है जिसमें –

– 2030 तक गैर जीवाश्म ऊर्जा उत्पाद 40% तक करना

– CO_2 का उत्पादन 2005 के स्तर तक लाना।

– CO_2 का उत्पादन 3 मिलियन टन कम करना।

उत्तर पुस्तिका

प्रश्न संख्या तथा उपक्रमांक अंकित करें (Question number and subsection number inside the boxes)

(3) स्मार्ट सिटी परियोजना - सतत विकास आधारित है।

(4) राष्ट्रीय जलवायु कार्ययोजना के अन्तर्गत - 8 परियोजनाएं प्रमुख -
- राष्ट्रीय हरित पर्यावरण मिशन
- राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन
- राष्ट्रीय हरित कृषि मिशन।
- संवर्द्धित ऊर्जा दक्षता मिशन

(5) REDD+ के भागीदारी के साथ वनीकरण व निर्वनीकरण को रोकना

(6) राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभ्यारण्य व जैवमंडल आगारों की स्थापना।

(7) आर्द्रभूमि संरक्षण।

(8) औद्योगिक उद्योग स्थापना से पूर्व पर्यावरण अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना।

(9) स्थानान्तरित कृषि पर रोक लगाना आदि

अरावली पर्वत श्रेणी

विस्तार - गुजरात (अहमदाबाद) से दिल्ली तक

दक्षिण में ऊँचाई अधिक

- उत्तर की ओर पृथकता क्रम

विशेषताएँ -

- प्राचीन अवशिष्ट पर्वत का उदाहरण है
- पूर्व से - बनास नदी, लूनी नदी
  पश्चिम - साबरमती नदी
- खनिज - लोहा, सीसा, तांबा, जस्ता, अभ्रक, [illegible] का भंडार
- प्राचीन आग्नेय, कुडप्पा क्रम की चट्टानों से निर्मित

→ सबसे ऊँची चोटी

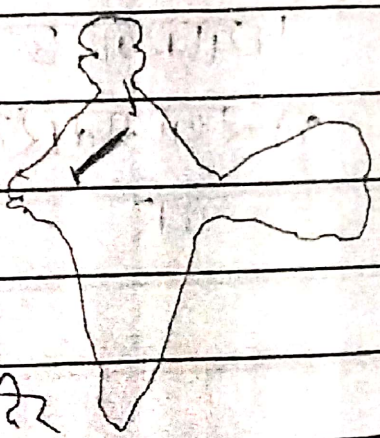

माउंट आबू -

↳ गुरु शिखर पर्वत

दिलवाड़ा का जैन मंदिर

→ माउंट आबू व गुरुशिखर के बीच

गोरम घाट दर्रा

→ यह प्रायद्वीपीय पठार का ही विस्तार है

→ पारिस्थितिक — राजस्थान के
अनुकूल पवनों के रोकना
गंगा के मैदान को
महत्व

→ अरावली की भूमिका — अरावली
अरावली के समानांतर प्रवाहित
अरब सागरीय वर्षा नहीं होती 60 cm से
कम वर्षा।

3½

महासागरीय लवणता →

जल मे उपस्थित लवणों / पदार्थों का भार तथा जल के प्रति इकाई जल के भार का अनुपात

लवणता = महासागरीय जल मे लवणों की मात्रा / 1000gm महासागरीय जल

औसत महासागरीय लवणता = 35‰

निम्न अक्षांश से उच्च अक्षांशो मे लवणता का वर्गीकरण

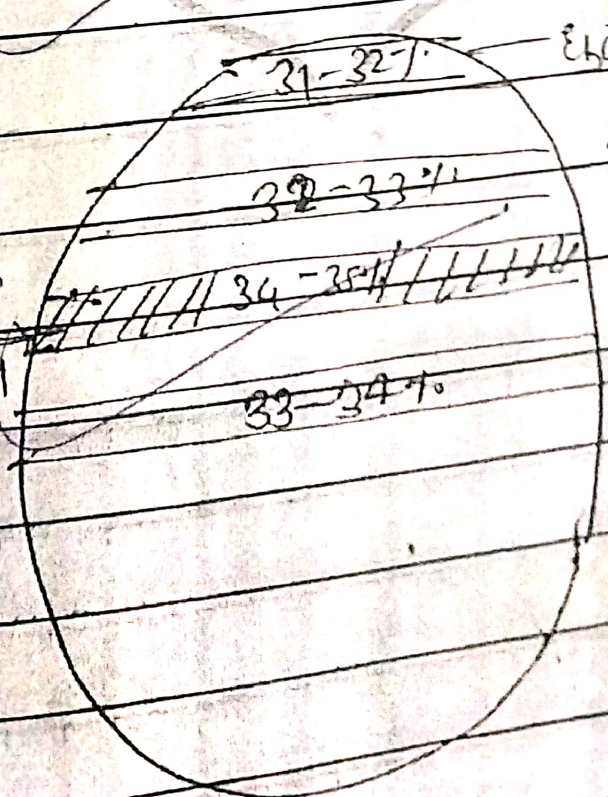

महासागरीय लवणता को नियंत्रित करने वाले कारक

- तापमान → वाष्पीकरण
- वर्षा की मात्रा
- नदियों द्वारा शुद्ध जल पूर्ति
- हिम गलन
- पवन प्रवाह

(1) तापमान → अधिक तापमान वाले विषुवत क्षेत्र में लवणता अधिक → वाष्पीकरण अधिक।
परन्तु वर्षा द्वारा जलपूर्ति से सर्वाधिक लवणता उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंध क्षेत्र में

(2) वर्षा – वर्षा द्वारा स्वच्छ जल की पूर्ति से प्रति इकाई आयतन महासागरीय जल में लवण की मात्रा कम होती है

(3) हिम गलन – स्वच्छ जल की पूर्ति होती है।

(4)

(5) महासागरीय → महासागरीय जल जलधाराएं - धारायें महत्व

ठंडी जल धारा - पश्चिमी महासागरों के पूर्वी तट से जल बहाकर ले जाती है।

पश्चिमी तटो पर लवणता अधिक

गर्म जलधाराएं → पूर्वी तट पर लवणता अधिक

(6) वायुमंडलीय पवनें - महासागरीय जल के प्रवाह को निर्धारित करती

→ व्यापारिक पवनों से प्रभावित क्षेत्र → महासागर के पूर्वी तट पर लवणता कम

→ पछुआ पवनें → पश्चिमी तट पर लवणता अधिक

उत्तर पुस्तिका

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

इस प्रकार महासागरीय लवणता को
कई से कारक मिल कर निर्धारित
करते हैं जिसमें तापमान के अतिरिक्त
वाष्पीकरण, नदियों द्वारा आवाह
जोवा, स्वच्छ जल की प्राप्ति

उदा - बंगाल की खाडी की लवणता
अरब सागर से कम है
क्योंकि गंगा ब्रह्मपुत्र जैसी
नदियों द्वारा स्वच्छ जल की प्राप्ति

8

Leave Blank
रिक्त छोड़ें

Do not write beyond this line
इस पंक्ति के बाहर कुछ भी ना लिखें

3 (c)

गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के ... ऊर्जा ... हैं ... ऊर्जा ... महंगी ... है

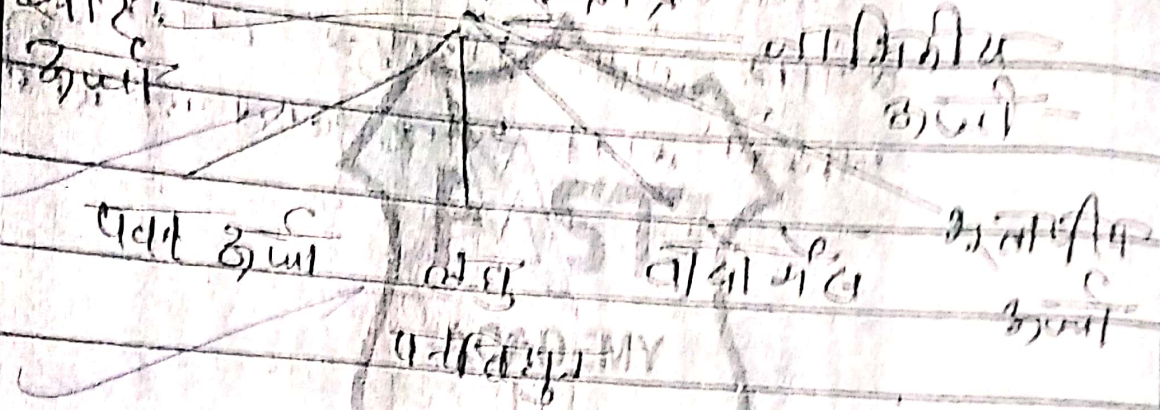

(i) सौर ऊर्जा – सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलना
→ असमाप्य
→ प्रदूषण रहित है।

(ii) पवन ऊर्जा – पवनों का प्रयोग कर टर्बाइन घुमाना व यांत्रिक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा बनाना
→ महंगी तकनीक
→ प्रदूषण रहित
→ पक्षियों को हानिकारक

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

question number and subsection number inside the boxes
दिए गए बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

(3) लघु पन विद्युत → छोटी जलविद्युत परियोजना
→ सिंचाई / मत्स्यन ↑
→ सस्ती

(4) बायोगैस → जैव व्यर्थ पदार्थों का प्रयोग
से बायोगैस उत्पादन

(5) भूतापीय ऊर्जा → पृथ्वी आंतरिक ऊर्जा का
प्रयोग करके
→ स्वच्छ व पर्यावरण हितैषी

(6) नाभिकीय ऊर्जा → बिना पर्यावरण प्रदूषण
के नाभिकीय पदार्थों
यूरेनियम, प्लूटोनियम आदि
का प्रयोग → ऊर्जा का उत्पादन

वर्तमान में 60% से अधिक
ऊर्जा का उत्पादन परंपरागत ऊर्जा
स्त्रोतों से प्राप्त होती है
जो कि धीरे धीरे
समाप्त हो रहे हैं
→ कोयला
→ पेट्रोलियम
→ प्राकृतिक गैस

Leave Blank
रिक्त छोड़ें

Do not write beyond this line
इस पंक्ति के बाहर कुछ भी ना लिखें

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

गैरपरम्परागत ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता →

① उपलब्ध परम्परागत ऊर्जा के संसाधन का निश्चित भंडार को आने वाले समय तक समाप्त अतः धारणीयता हेतु उनका संरक्षण आवश्यक है।

② परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों से अत्याधिक वायुमंडल प्रदूषण → फलस्वरूप → ग्लोबल वार्मिंग → जलवायु परिवर्तन → प्राकृतिक आपदायें

③ बड़े-बड़े बांधो के निर्माण से → अत्याधिक धन का व्यय → लोगों का विस्थापन व पुनर्वास → प्राकृतिक धरोहरों का डूबना → आवासों को नष्ट होना → जीव जन्तुओं व वनस्पति पर दुष्प्रभाव

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

Write question number and subquestion number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपप्रश्नांक अंकित करें

(5) नदी घाटी परियोजना से भूकंप आने की संभावना रहती है

(6) कोयला आधारित तापविद्युत केन्द्र से वायुमंडल प्रदूषण उत्पन्न होता है

(c) भारत ने लक्ष्य रखा जिसमें CO2 उत्सर्जन कम करना रखे, (b) गैर-जीवाश्म ऊर्जा का उत्पादन 40% से अधिक करना।

परन्तु गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों के प्रयोग चुनौतियां है-

(1) मांग अनुसार पर्याप्त उत्पादन नहीं होना

(2) विदेशी कंपनियों क्षेत्र की भूमिका कम

6

(3) ग्रामीण क्षेत्र में विद्युत चोरी

(4) अत्यधिक मंहगी तकनीक है

(5) अभी अनुसंधान की जरूरत है

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

Question number and subsection number inside the boxes
प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

2 (i) भारत में तापमान और वर्षा, पानी उच्चावच, मिट्टी, जलवायु
पानी, कृषि पद्धति के अनुसार तथा क्षेत्र विशेष की पर्यावरणीय
समस्याओं के आधार पर
15 कृषि जलवायु प्रदेशों में
वर्गीकृत किया गया है।

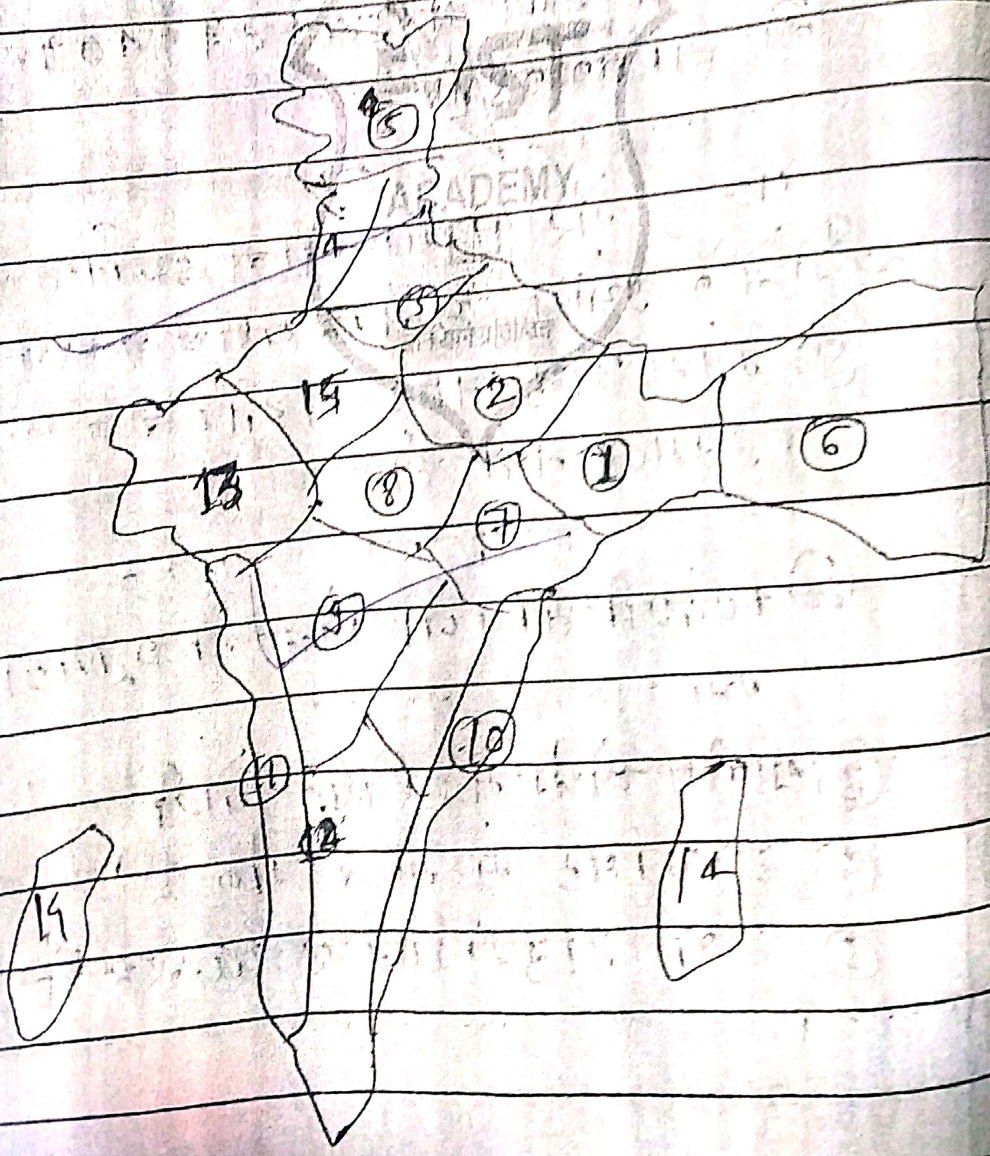

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

प्र०(6) कृषि जलवायु क्षेत्र

① पूर्वी गंगा का मैदान — जलोढ मिट्टी
(निम्न)
— 100-120 cm वर्षा

→ धान की कृषि → पश्चिम बंगाल, बिहार

② पश्चिमी गंगा का मैदान

② मध्य गंगा का मैदान → उत्तर प्रदेश
का मध्य भाग
— जलोढ मिट्टी

③ ऊपरी गंगा का मैदान

प्रदेश — उत्तर पश्चिमी उत्तर प्रदेश
पंजाब, हरियाणा,
पुरानी जलोढ, बांगर
वर्षा अपेक्षाकृत कम

④ पूर्वी हिमालय —
— उत्तर पूर्वी प्रदेश —
— असम, मेघालय, त्रिपुरा,
मिजोरम
— वर्षा 200 cm
— अधिकांश — पर्वतीय मिट्टी

⑤ पश्चिमी हिमालय — जम्मू कश्मीर,
हिमाचल, उत्तराखंड

उत्तर पुस्तिका

(i) द्वि गंगा का मैदान

- पंजाब, हरियाणा का क्षेत्र
- राजस्थान का क्षेत्र
- उत्तरप्रदेश का उच्च भाग

(ii) पूर्वी पठारी क्षेत्र –

- झारखण्ड, छत्तीसगढ़,
- बिहार का पश्चिमी भाग
- ओडिशा का क्षेत्र
- वर्षा 100-120 cm
- लाल-पीली मिट्टी

(iii) मध्य पठारी क्षेत्र

- म.प्र., छत्तीसगढ़ का मैदान,
- मध्य भारत का पठार,
- मेवाड़ पठार
- गुजरात व राजस्थान के क्षेत्र
- 80-100 cm वर्षा
- पठार, कपासी / काली मृदा

(iv) दक्षिण पठारी व पहाड़ी –

- पश्चिमी क्षेत्र – लेटेराइट मिट्टी
- कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

...on number and subsection number inside the boxes
प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

केरल, व
काली, लोहे तथा जलोढ़ मिट्टी
बागानी फसल – चाय, र, कहवा

(i) पूर्वी तटीय मैदान –
– उत्कल, आंध्र तथा कोरोमण्डल तट।
– उड़ीसा, आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु का तटीय भाग,
– कृषि की दृष्टि से उपजाऊ
कृष्णा, गोदावरी व महानदी का अपवाह क्षेत्र

(ii) पश्चिमी तटीय मैदान – पर्वतीय ऊबड़ खाबड़ जमीन
– अधिक वर्षा
– वनों की अधिकता
– कृषि हेतु अधिक उपयुक्त नहीं

(v) पश्चिमी शुष्क प्रदेश –
– पश्चिमी घाट पर्वत का वृष्टि छाया क्षेत्र, वर्षा अत्यधिक कम
– लाल मिट्टी

Leave Blank
Do not write beyond this line

ANSWER BOOK
उत्तर पुस्तिका

Fill question number and subsection number inside the boxes
बॉक्स में प्रश्न क्रमांक तथा उपक्रमांक अंकित करें

(13) गुजरात का तटीय मैदान

- काली मिट्टी प्रधान
- कपास, मूंगफली की खेती
- दलदल पदार्थ क्षेत्र का हिस्सा

(14) द्वीपीय प्रदेश - 3

- अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह
- लक्षद्वीप
- मैंग्रोव वनस्पति
- पीट मिट्टी

(15) शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश

- राजस्थान का पश्चिमी भाग
- गुजरात का उत्तरी
- पंजाब हरियाणा का पश्चिमी भाग
- बलुई मिट्टी
- लवणीय मिट्टी
- 25 cm से कम वर्षा

8